1 याद तुम्हारी आती है

सुबह-सुबह जब चिड़ियाँ उठकर,
कुछ गीत खुशी के गाती हैं,
कलियाँ दरवाजे खोल-खोल,
जब दुनिया पर मुस्काती है,
खुशबू की लहरें जब घर से
बाहर आ दौड़ लगाती हैं,
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है।

जब छम-छम बूँदें गिरती हैं,
बिजली चम-चम कर जाती है,
मैदानों में वन-बागों में
जब हरियाली लहराती है,
जब ठंडी-ठंडी हवा कहीं से,
मस्ती ढो कर लाती है,
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है।

-राम नरेश त्रिपाठी

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ:

खुशबू – सुगंध   सिरजनहार – बनाने वाला